1 नव विहान

प्रस्तावना : कवि ईश्वर से जीवन में चिर महान अर्थात सत्य, शिव और सुन्दर प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

जग-जीवन में जो चिर महान,
सौंदर्य-पूर्ण और सत्य प्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ,
जो हो मानव के हित समान।

जिससे जीवन में मिले शक्ति,
छूटे भय, संशय, अंधभक्ति,
मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ,
मिल जाएँ जिसमें अखिल व्यक्ति।

पाकर प्रभु, तुमसे अमर दान,
करके मानव का परित्राण,
ला सकूँ विश्व में एक बार,
फिर से नवजीवन का विहान।

– सुमित्रानंदन पंत

शब्दार्थ – संशय–संदेह/Doubt, अखिल–पूरा/Whole, परित्राण–रक्षा/Protection, विहान–सुबह/Morning.

शिक्षा – चिर महान की प्राप्ति से मनुष्यों के बीच का भेद समाप्त होगा, उनमें प्रेम की भावना उत्पन्न होगी।

अभ्यास से सीखें

संकलित अभिव्यक्ति

1. व्याकरणिक शब्द-ज्ञान–

(क) नए शब्द सीखें–

(*i*)

वि
- हार = विहार
- ज्ञान = ...
- राम = ...

(*ii*)

अ
- भिन्न = ...
- धिक = ...
- पूर्व = ...

मौखिक

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवि किसका प्रेमी बनना चाहता है?

(ख) कवि किससे अमर दान पाना चाहता है?

(ग) कवि नव जीवन में क्या लाना चाहता है?

लिखित

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि किस तरह का प्रकाश लाना चाहता है?

(ख) 'अखिल व्यक्ति' से आप क्या समझते हैं?

(ग) मानव हित के लिए कवि क्या करना चाहता है?

(घ) कवि अमर दान क्यों पाना चाहता है?

(ङ) इस कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

वैकल्पिक

4. सही उत्तर चुनकर (✓) सही का निशान लगाइए।

(क) कविता में कवि ने चिर महान कहा है?

(*i*) सौन्दर्य को ◯ (*ii*) सत्य प्राण को ◯ (*iii*) दोनों को ◯

(ख) कविता में कवि हित चाहता है?

(*i*) मानव का ◯ (*ii*) समाज का ◯ (*iii*) राज्य का ◯

(ग) कवि छुटकारा पाना चाहता है।

(*i*) अखिल भक्ति ◯ (*ii*) भय, संशय ◯ (*iii*) भेद का अंधकार ◯

5. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

जग-जीवन में जो चिर महान,

सौंदर्य .....।

मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ,

.....समान।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. प्रातः उठने पर आपको कैसा लगता है अपने अनुभव पाँच वाक्यों में अपने मित्र को बताइए।
2. अपनी पुस्तिका में प्रातः का चित्र बनाइए और मनपसंद रंगों में रंगिए।

शिक्षण संकेत – बच्चों को कविता का भाव सरल शब्दों में समझाकर कविता कंठस्थ कराएँ तथा अन्य प्रातः पर आधारित कविता भी बताएँ।